UGC NET Paper= 2.. Sanskrit

Filler Form

YouTube

JRF का जलवा

व्याकरण एवं भाषाविज्ञान सामान्य परिचय

UNIT=5

Daily = 6 pm

Class = 84

By=NIDHU CHAUDHARY

B.A., M.A., P.G.D.C.A., now Ph.d purshuing

UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages
+91 81453 66384 joined using this group's invite link
+91 70102 37343 joined using this group's invite link
+91 96672 47765 joined using this group's invite link
+91 98557 99207 joined using this group's invite link
+91 60035 13791 joined using this group's invite link
+91 83590 38670 joined using this group's invite link
+91 91497 27505 joined using this group's invite link
+91 70910 66218 joined using this group's invite link
+91 75779 16791 joined using this group's invite link
+91 60035 13791 left
+91 90012 26665 joined using this group's invite link
+91 80037 25657 joined using this group's invite link
+91 89555 46730 joined using this group's invite link
Type a message

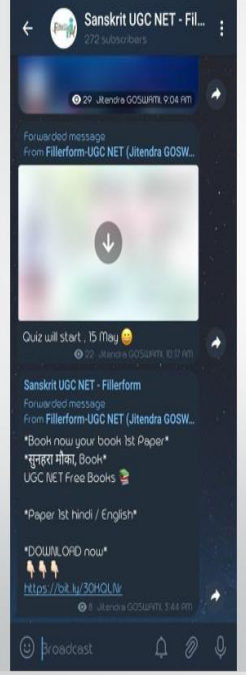
Sanskrit UGC NET - Fil...
272 subscribers
Forwarded message
From Fillerform-UGC NET (Jitendra GOSW...
Quiz will start , 15 May
Sanskrit UGC NET - Fillerform
Book now your book 1st Paper
सुनहरा मौका, Book
UGC NET Free Books
Paper 1st hindi / English
DOWNLOAD now
https://bit.ly/3OHQLIv
Broadcast

SANSKRIT BY NIDHU
25 members
Fillar From
Forwarded message
From Fillerform-UGC NET (Jitendra...
Book now your book 1st Paper
सुनहरा मौका, Book
UGC NET Free Books
Paper 1st hindi / English
DOWNLOAD now
https://bit.ly/3OHQLIv
Maya Jatwa
Photo
Very good
Message

Filler Form
LATEST UPLOADS
UGC NET Paper 1st
Teaching Aptitude
"Level of Teaching"
11:00 AM Level Of Teaching | Teaching
LEARNING MATERIAL
Quizzes
Notes
Sample Papers
UGC NET 100%
Off Free Class
Free Notes
Live Class
100% OFF
5000+MCQ+PYQ
Free Books
fillerform

NET Free Class
09:00 AM- GK Class
11:00 AM- Paper 1st
12:00 PM - Hindi 2nd
01:00 PM- History 2nd
02:00 PM- Paper 1st MCQ
03:00 PM- Commerce 2nd
06:00 PM- Sanskrit 2nd
07:00 PM - Short video(notes)
08:00 PM- Job/PhD update
09:00 PM- Paper 1st DI
Fillerform

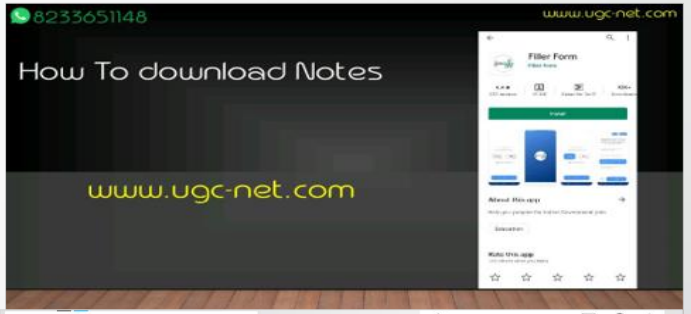
8233651148
www.ugc-net.com
How To download Notes
www.ugc-net.com

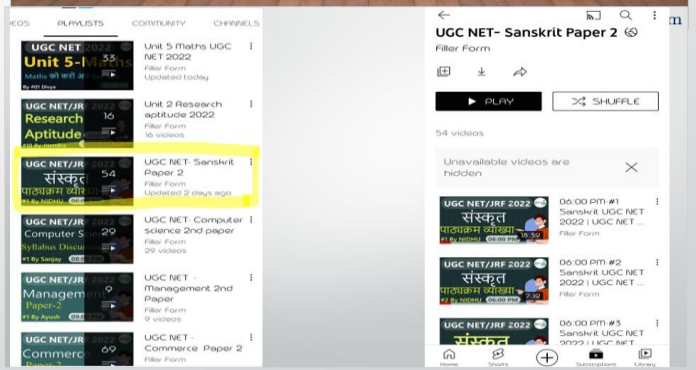
PLAYLISTS
COMMUNITY
CHANNELS
UGC NET Unit 5-I
Unit 5 Maths UGC NET 2022
Unit 2 Research aptitude 2022
UGC NET: Sanskrit Paper 2
UGC NET: Computer science 2nd paper
UGC NET - Management 2nd Paper
UGC NET - Commerce Paper 2
UGC NET- Sanskrit Paper 2
Filler Form
PLAY
SHUFFLE
54 videos
Unavailable videos are hidden

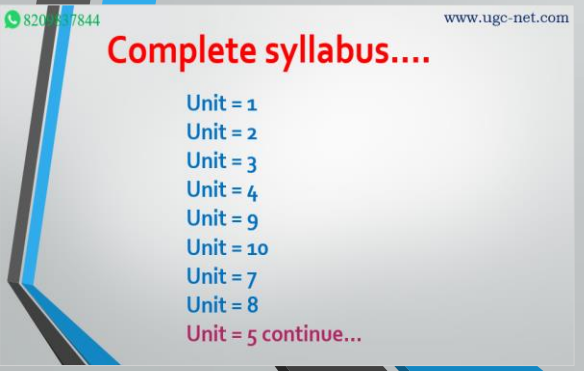
8209837844
www.ugc-net.com
Complete syllabus....
Unit = 1
Unit = 2
Unit = 3
Unit = 4
Unit = 9
Unit = 10
Unit = 7
Unit = 8
Unit = 5 continue...

8209837844
www.ugc-net.com
We want JRF
JRF का जलवा
We want JRF

UGC NET Giveaway
Free Smart Watch
MAY
22
Apply Now
GIVEAWAY
www.ugc-net.com
Fillerform
8209837844

UGC NET Giveaway
GIVEAWAY
www.ugc-net.com
Fillerform
8209837844

UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages

+91 81453 66384 joined using this group's invite link

+91 70102 37343 joined using this group's invite link

+91 96672 47765 joined using this group's invite link

+91 98557 99207 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 joined using this group's invite link

+91 83590 38670 joined using this group's invite link

+91 91497 27505 joined using this group's invite link

+91 70910 66218 joined using this group's invite link

+91 75779 16791 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 left

+91 90012 26665 joined using this group's invite link

+91 80037 25657 joined using this group's invite link

+91 89555 46730 joined using this group's invite link

Type a message

Sanskrit UGC NET - Fil...
272 subscribers

29 Jitendra GOSWAMI, 9:04 AM

Forwarded message
From Fillerform-UGC NET (Jitendra GOSW...

Quiz will start , 15 May 😀
22 Jitendra GOSWAMI, 10:17 AM

Sanskrit UGC NET - Fillerform
Forwarded message
From Fillerform-UGC NET (Jitendra GOSW...
Book now your book 1st Paper
सुनहरा मौका, Book
UGC NET Free Books 📚

Paper 1st hindi / English

DOWNLOAD now
👇👇👇
https://bit.ly/30KQLNr
8 Jitendra GOSWAMI, 3:44 PM

Broadcast

SANSKRIT BY NIDHU
25 members

MJ

2:42 PM

Fillar From
Forwarded message
From Fillerform-UGC NET (Jitendra...
Book now your book 1st Paper
सुनहरा मौका, Book
UGC NET Free Books 📚

Paper 1st hindi / English

DOWNLOAD now
👇👇👇
https://bit.ly/30KQLNr
344 Jitendra GOSWAMI, 3:44 PM

Maya Jatwa
Photo
Very good 👍 4:59 PM

Message

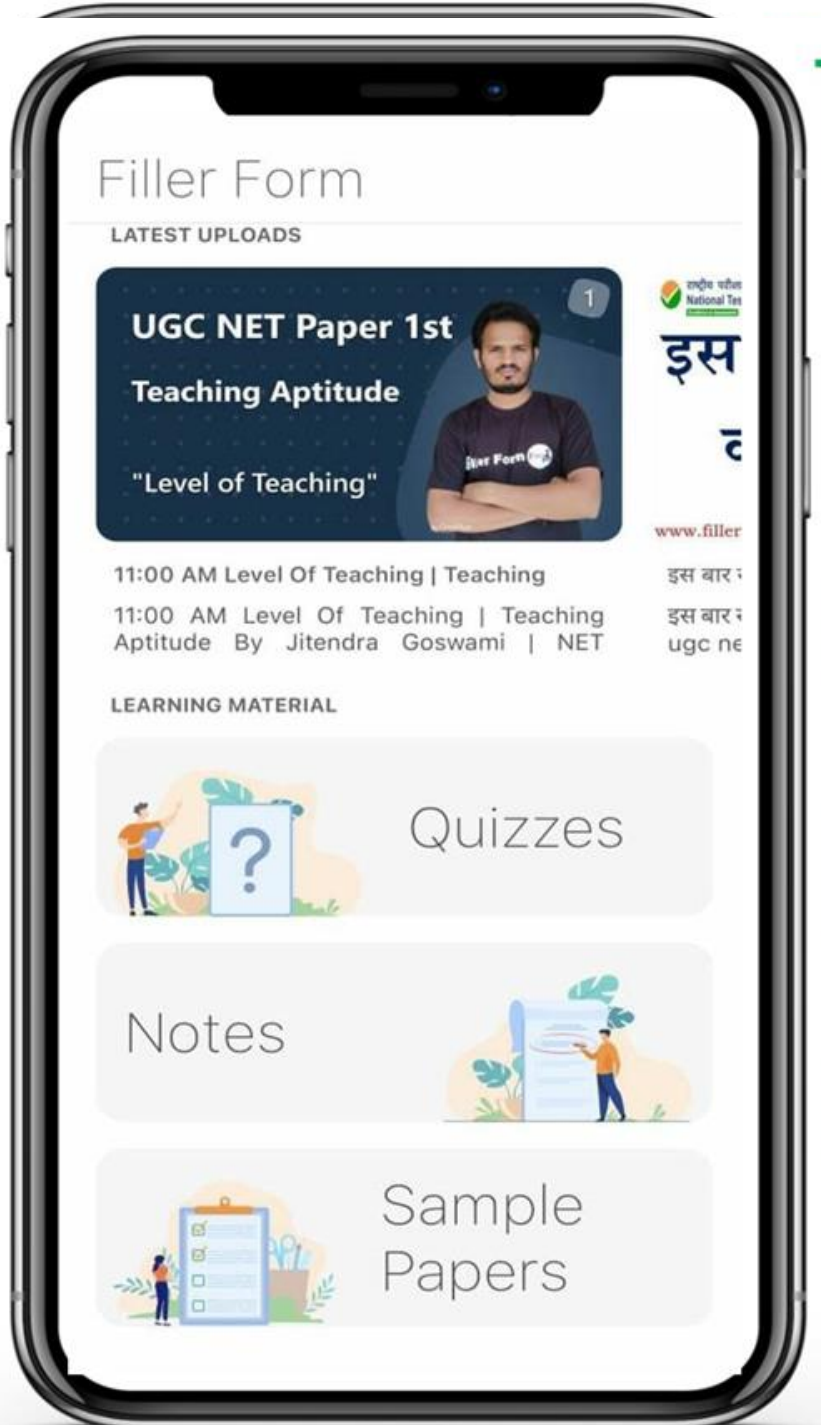

UGC NET 100% Off Free Class

Free Notes

Live Class

100% OFF

5000+MCQ+PYQ

Free Books

fillerform

8209837844

www.ugc-net.com

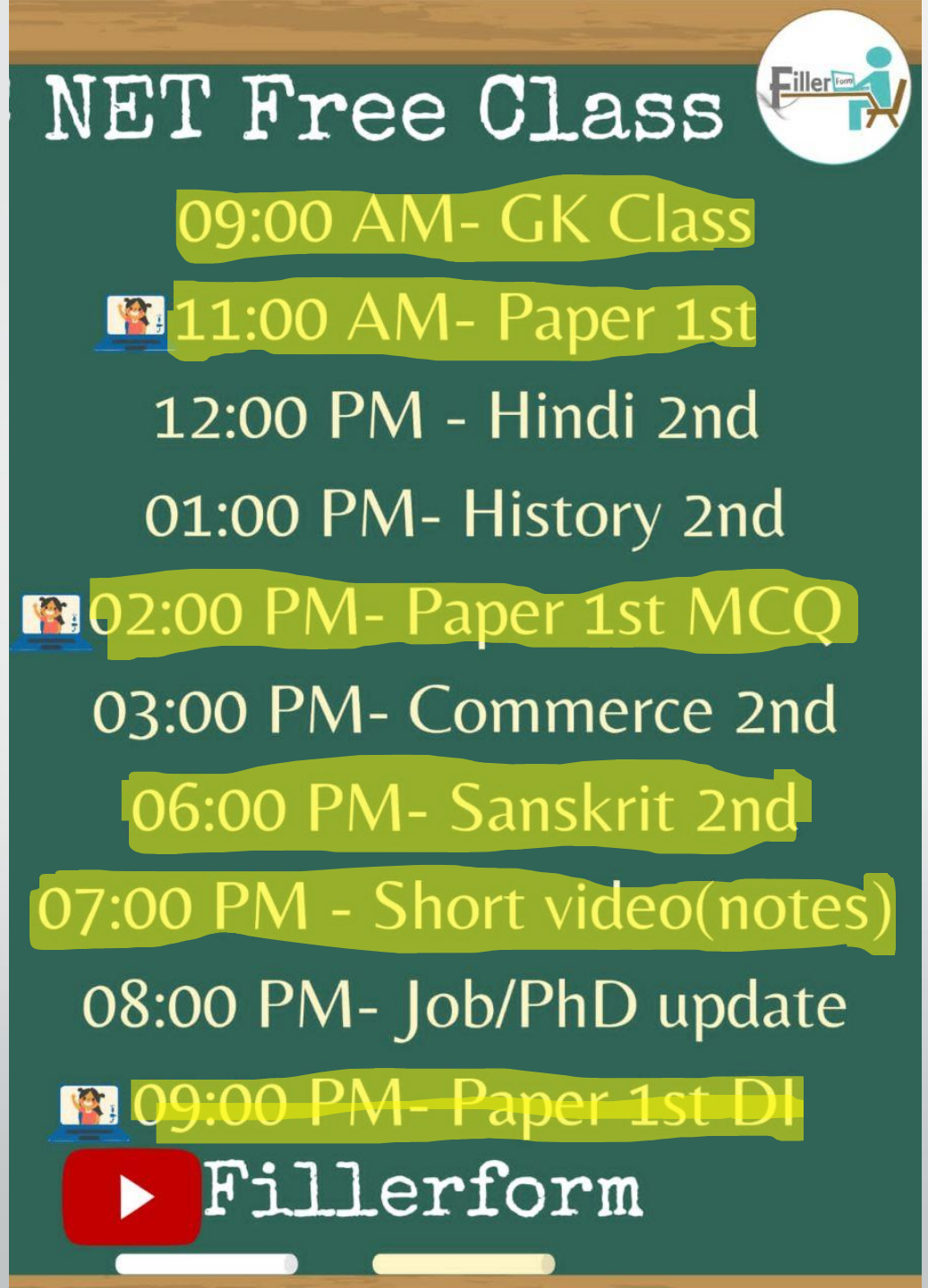

8233651148

www.ugc-net.com

How To download Notes

www.ugc-net.com

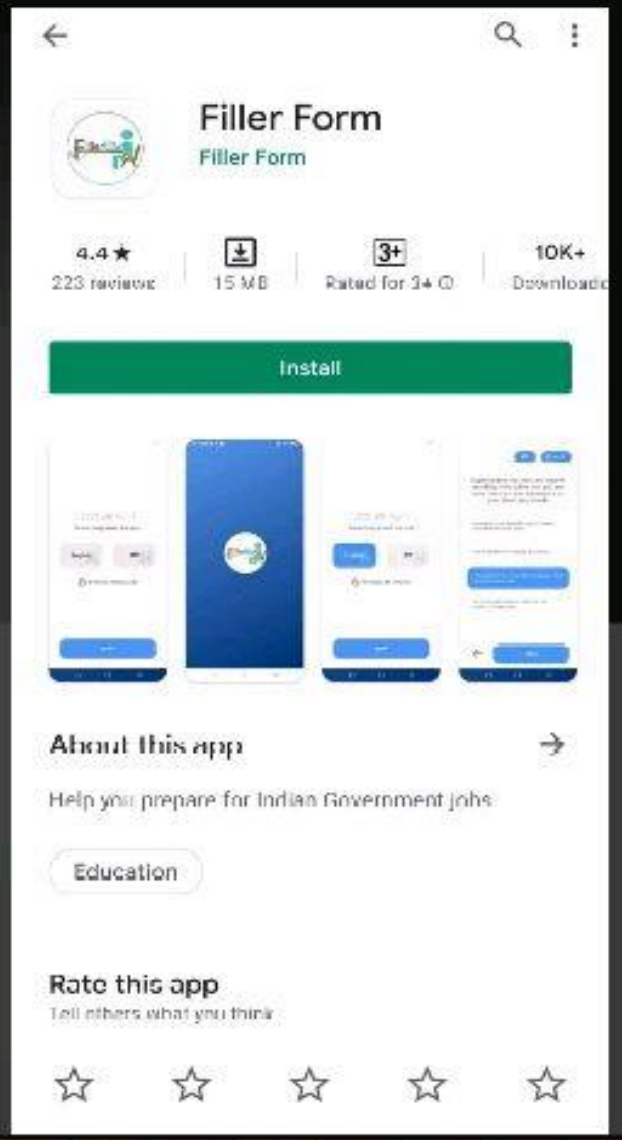

EOS PLAYLISTS COMMUNITY CHANNELS

Unit 5 Maths UGC NET 2022
Filler Form
Updated today

Unit 2 Research aptitude 2022
Filler Form
16 videos

UGC NET- Sanskrit Paper 2
Filler Form
Updated 2 days ago

UGC NET- Computer science 2nd paper
Filler Form
29 videos

UGC NET - Management 2nd Paper
Filler Form
9 videos

UGC NET - Commerce Paper 2
Filler Form

UGC NET- Sanskrit Paper 2

Filler Form

PLAY SHUFFLE

54 videos

Unavailable videos are hidden

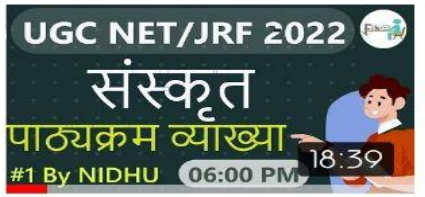

06:00 PM-#1 Sanskrit UGC NET 2022 | UGC NET ...
Filler Form

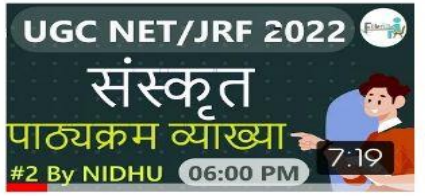

06:00 PM-#2 Sanskrit UGC NET 2022 | UGC NET ...
Filler Form

06:00 PM-#3 Sanskrit UGC NET 2022 | UGC NET

Home Shorts Subscriptions Library

UGC NET Giveaway

www.ugc-net.com

Fillerform

8209837844

UGC NET Giveaway

Free Smart Watch

Apply Now

www.ugc-net.com

Fillerform

8209837844

8209837844

www.ugc-net.com

We want JRF

We want JRF

8209837844

www.ugc-net.com

Complete syllabus....

Unit = 1

Unit = 2

Unit = 3

Unit = 4

Unit = 9

Unit = 10

Unit = 7

Unit = 8

Unit = 5 continue...

8209837844

www.ugc-net.com

Today's Topic....

ईकाई-5

॥व्याकरण एवं भाषाविज्ञान॥

8209837844

ww.ugc-net.com

(क) सामान्य परिचय-

प्रमुख आचार्यों का परिचय-

1. पाणिनि (500 ई. पू.)

पाणिनि संस्कृत भाषा के सबसे बड़े वैयाकरण हुए हैं। इनका जन्म तत्कालीन उत्तर पश्चिम भारत के **गांधार** में हुआ था। पाणिनि के **गुरु** का नाम **उपवर्ष, पिता** का नाम **पणिन** और **माता** का नाम **दाक्षी** था। इनके व्याकरण का नाम '**अष्टाध्यायी**' है जिसमें 'आठ अध्याय' और लगभग 'चार सहस्र' सूत्र हैं। संस्कृत भाषा को व्याकरण सम्मत रूप देने में पाणिनि का योगदान अतुलनीय माना जाता है। अष्टाध्यायी मात्र व्याकरण ग्रंथ नहीं है इसमें प्रकारांतर से तत्कालीन भारतीय समाज का पूरा चित्र मिलता है। उस समय के भूगोल, सामाजिक, आर्थिक, शिक्षा और राजनीतिक जीवन, दार्शनिक चिंतन, ख़ान-पान, रहन-सहन आदि के प्रसंग स्थान-स्थान पर अंकित हैं।

8209837844

ww.ugc-net.com

जीवनी एवं कार्य-

पाणिनि का जन्म **'शालातुर'** नामक ग्राम में हुआ था। जहाँ काबुल नदी सिंधु में मिली है उस संगम से कुछ मील दूर यह गाँव था। उसे अब 'लाहौर' कहते हैं। अपने जन्मस्थान के अनुसार पाणिनि **'शालातुरीय'** भी कहे गए हैं। और अष्टाध्यायी में स्वयं उन्होंने इस नाम का उल्लेख किया है। पाणिनि ने निरुक्त और व्याकरण की जो सामग्री पहले से थी उसका उन्होंने संग्रह और सूक्ष्म अध्ययन किया। इसका प्रमाण भी अष्टाध्यायी में है, जैसा शाकटायन, शाकल्य, भारद्वाज, गार्ग्य, शौनक, आपिशलि, गालब और स्फोटायन आदि आचार्यों के मतों के उल्लेख से ज्ञात होता है। शाकटायन निश्चित रूप से पाणिनि से पूर्व के वैयाकरण थे, जैसा निरुक्तकार यास्क ने लिखा है। शाकटायन का मत था कि सब संज्ञा शब्द धातुओं से बनते हैं। पाणिनि की शिक्षा तक्षशिला विश्वविद्यालय से हुई है । कहा जाता है, जब वे अपनी सामग्री का संग्रह कर चुके तो उन्होंने कुछ समय तक एकांतवास किया और अष्टाध्यायी की रचना की।

8209837844

www.ugc-net.com

समयकाल- इनका समयकाल अनिश्चित तथा विवादित है। इतना तय है कि छठी सदी ईसा पूर्व के बाद और चौथी सदी ईसापूर्व से पहले की अवधि में इनका अस्तित्व रहा होगा। ऐसा माना जाता है कि इनका जन्म पंजाब (पाकिस्तान) के शालातुर में हुआ था जो आधुनिक पेशावर (पाकिस्तान) के करीब है। इनका जीवनकाल 520-460 ईसा पूर्व माना जाता है।

8209837844

www.ugc-net.com

आचार्य पाणिनि की रचनाऐं-

आचार्य पाणिनि ने संस्कृत के रक्षण के लिए व्याकरण के पाँच ग्रंथो की रचना की एवं एक काव्य लिखा-

1. **सूत्रपाठ-** 'अष्टाध्यायी' - इसमे सूत्र हैं जो 8 अध्याय एवं प्रत्येक अध्याय 4-4 पाद यानि कुल 32 पाद में विभक्त हैं और कुल लगभग 4000 सूत्र हैं।
2. **धातुपाठ-** यह 10 गणों में विभक्त एवं लगभग 2000 धातुएं हैं ।
3. **गणपाठ-** सूत्रपठित गणों का पाठ ।
4. **उणादिपाठ-** यह भी सूत्र ही हैं ।
5. **लिंगानुशासन-** लिङ्ग निर्धारण विषय है ।

पाणिनि का काव्य- **'जाम्बवतीयकाव्यम्'** है । युधिष्ठिर मीमांसक के कथनानुसार इनका **"द्विरूपकोष"** नामक एक ग्रन्थ **"इन्डिया आफ़िस पुस्तकालय (लंडन)"** में सुरक्षित है ।

82098 ... net.com

पाणिनि का संक्षिप्त परिचय-

- **जन्म-** (520-460 ई. पू.) शालातुरग्राम,
- **मृत्यु-** त्रयोदशी तिथि,
- **माता-** दाक्षी, पणिनः,
- **पिता-** शालङ्किः
- **व्यवसाय-** वैयाकरणः,कविः।
- **राष्ट्रीयता-** भारतीय',
- **विधा-** संस्कृतव्याकरण के सूत्र रचयिता,
- **कृतियाँ-**अष्टाध्यायी,धातुपाठ,गणपाठ,उणादिपाठ,लिङ्गानुशासनम्, **काव्य-** जाम्बवतीवजियम्,

8209837844

www.ugc-net.com

2. कात्यायन (300 ई. पू.)

'वररुचि' कात्यायन पाणिनीय सूत्रों के प्रसिद्ध **वार्तिककार** हैं। वररुचि कात्यायन के **वार्तिक** पाणिनीय व्याकरण के लिए अति महत्त्वशाली सिद्ध हुए हैं। वार्तिकों के आधार पर ही पीछे से **पतंजलि** ने **महाभाष्य** की रचना की। **पुरुषोत्तमदेव** ने अपने **त्रिकांडशेष अभिधानकोश** में कात्यायन के ये नाम लिखे हैं - **कात्य, पुनर्वसु, मेधाजित्** और **वररुचि**। "कात्य" नाम गोत्रप्रत्यांत है, महाभाष्य में उसका उल्लेख है। पुनर्वसु नाम नक्षत्र संबंधी

8209837844

www.ugc-net.com

है, "**भाषावृत्ति**" में पुनर्वसु को वररुचि का पर्याय कहा गया है। मेधाजित् का कहीं अन्यत्र उल्लेख नहीं मिलता। इसके अतिरिक्त, कथासरित्सागर और बृहत्कथामंजरी में कात्यायन वररुचि का एक नाम '**श्रुतधर**' भी आया है। हेमचंद्र एवं "**मेदिनी**" कोशों में भी कात्यायन के "वररुचि" नाम का उल्लेख है।

संभवत: इसी **वररुचि कात्यायन** ने **वेदसर्वानुक्रमणी** और **प्रातिशाख्य** की भी रचना की है। कात्यायन के बनाए कुछ **भ्राजसंज्ञक** श्लोकों की चर्चा भी महाभाष्य में की गई है। कैयट और नागेश के अनुसार भ्राजसंज्ञक श्लोक वार्तिककार के ही बनाए हुए हैं। कात्यायन (300 ई. पू.) दाक्षिणात्य वार्तिककार थे, '**प्रियतद्धिताः हि दाक्षिणात्याः**'- पतंजलि । इनके काव्य के विषय में पतंजलि ने महाभाष्य में संकेत किया है- '**वाररुचं काव्यम्**' । कात्यायन पाणिनि और पतंजलि के मध्य श्रृंखला जोड़ने वाले माने जाते है ।

कात्यायन की रचनाऐं-

1. कात्यायनस्मृति,
2. स्वर्गारोहणकाव्य,
3. उभयसारिकाभाग,
4. भ्राजश्लोक।

820983 -net.com

3. पतञ्जलि (185 ई.पू.)

पतञ्जलि **गोनर्द** (गोंडा जिला उत्तर प्रदेश) के निवासी थे, बाद में वे काशी में बस गए , ये व्याकरणाचार्य **पाणिनी** के शिष्य थे। पतंजलि को **शेषनाग** का अवतार माना जाता है । इनकी **माता** का नाम **गोणिका** था । पतंजलि **योगसूत्र** के रचनाकार है । भारतीय साहित्य में पतंजलि के लिखे हुए तीन मुख्य ग्रन्थ मिलते है । **योगसूत्र,** अष्टाध्यायी पर भाष्य और **आयुर्वेद** पर ग्रन्थ। कुछ विद्वानों का मत है कि ये तीनों ग्रन्थ एक ही व्यक्ति ने लिखे, अन्य की धारणा है कि ये विभिन्न व्यक्तियों की कृतियाँ हैं। पतंजलि ने पाणिनि के अष्टाध्यायी पर अपनी टीका लिखी जिसे **महाभाष्य** का नाम दिया (**महा+भाष्य (समीक्षा, टिप्पणी, विवेचना, आलोचना)**।

8209837844 .ugc-net.com

जीवन- पतञ्जलि **'शुंग वंश'** के शासनकाल में थे। **डॉ. भंडारकर** ने पतंजलि का समय 185 ई. पू. **बोथलिक** ने पतंजलि का समय 200 ईसा पूर्व एवं **कीथ** ने उनका समय 140 से 150 ईसा पूर्व माना है। पतंजलि पुष्यमित्र शुंग (195-142 ई.पू.) के शासनकाल में थे। उन्होंने **'पुष्यमित्र शुंग'** का **अश्वमेघ यज्ञ** भी संपन्न कराया था। पतंजलि महान चिकित्सक थे और इन्हें ही 'चरक संहिता' का प्रणेता माना जाता है। राजा भोज ने इन्हें तन के साथ मन का भी चिकित्सक कहा है।

"योगेन चित्तस्य पदेन वाचां मलं शरीरस्य च वैद्यकेन।
योऽपाकरोत्तं प्रवरं मुनीनां पतंजलिं प्रांजलिरानतोऽस्मि"॥ (भोज)

अर्थात् चित्त-शुद्धि के लिए योग (योगसूत्र), वाणी-शुद्धि के लिए व्याकरण (महाभाष्य) और शरीर-शुद्धि के लिए वैद्यकशास्त्र (चरकसंहिता) देनेवाले मुनिश्रेष्ठ पतंजलि को प्रणाम।

82098 ... net.com

पतंजलि की रचनाऐं-

1. महाभाष्य, 2. योगसूत्र, 3. महानन्दकाव्य ।

4. भर्तृहरि (छठी शताब्दी ई.)

भर्तृहरि एक महान संस्कृत कवि थे। संस्कृत साहित्य के इतिहास में भर्तृहरि एक **नीतिकार** के रूप में प्रसिद्ध हैं। इनके **शतकत्रय (नीतिशतक, श्रृंगारशतक, वैराग्यशतक)** की उपदेशात्मक कहानियाँ भारतीय जनमानस को विशेष रूप से प्रभावित करती हैं। प्रत्येक शतक में सौ-सौ श्लोक हैं। बाद में इन्होंने **गुरु गोरखनाथ** के शिष्य बनकर वैराग्य धारण कर लिया था इसलिये इनका एक लोकप्रचलित नाम **बाबा भरथरी** भी है।

8209837844

www.ugc-net.com

जनश्रुति और परम्परा के अनुसार भर्तृहरि विक्रमसंवत् के प्रवर्तक सम्राट **चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य** के अग्रज माने जाते हैं। विक्रमसंवत् ईसवी सन् से 56 वर्ष पूर्व प्रारम्भ होता है, जो विक्रमादित्य के प्रौढ़ावस्था का समय रहा होगा। भर्तृहरि विक्रमादित्य के अग्रज थे, अतः इनका समय कुछ और पूर्व रहा होगा। विक्रमसंवत् के प्रारम्भ के विषय में भी विद्वानों में मतभेद हैं। कुछ लोग ईसवी **सन् 78** और कुछ लोग ईसवी सन् **544में** इसका प्रारम्भ मानते हैं। ये दोनों मत भी अग्राह्य प्रतीत होते हैं।

8209837844

ww.ugc-net.com

फारसी ग्रंथ **कलितौ दिमनः** में पंचतंत्र का एक पद्य शशिदिवाकर का भाव उद्धृत है। पंचतंत्र में अनेक ग्रंथों के पद्यों का संकलन है। संभवतः पंचतंत्र में इसे नीतिशतक से ग्रहण किया गया होगा। फारसी ग्रंथ 571 ईसवी से 581 ई. के एक फारसी शासक के निमित्त निर्मित हुआ था। इसलिए राजा भर्तृहरि अनुमानतः **550 ई0** से पूर्व हम लोगों के बीच आए थे। भर्तृहरि **उज्जयिनी** के राजा थे। ये विक्रमादित्य उपाधि धारण करने वाले चन्द्रगुप्त द्वितीय के बड़े भाई थे। इनके पिता का नाम **चन्द्रसेन** था। पत्नी का नाम **पिंगला** था जिसे वे अत्यन्त प्रेम करते थे। इन्होंने सुन्दर और रसपूर्ण भाषा में नीति, वैराग्य तथा शृंगार जैसे गूढ़ विषयों पर शतक-काव्य लिखे हैं। इस शतकत्रय के अतिरिक्त, **वाक्यपदीय** नामक एक उच्च श्रेणी का व्याकरण ग्रन्थ भी इनके नाम पर प्रसिद्ध है। कुछ लोग भट्टिकाव्य के रचयिता भट्टि से भी उनका ऐक्य मानते हैं। ऐसा कहा जाता है कि नाथपंथ के वैराग्य नामक उपपंथ के यह ही प्रवर्तक थे। चीनी यात्री इत्सिंग और ह्वेनसांग के अनुसार इन्होंने बौद्ध धर्म ग्रहण किया था।

8209837844

www.ugc-net.com

भर्तृहरि की रचनाऐं-

वाक्यपदीय, नीतिशतक, श्रृंगारशतक, वैराग्यशतक, दीपिका टीका।

5. वामनजयादित्य (सातवीं शताब्दी)

जयादित्य संस्कृत के वैयाकरण थे। **काशिकावृत्ति** जयादित्य और वामन की सम्मिलित रचना है। **हेमचंद्र** ने अपने **'शब्दानुशासन'** में व्याख्याकार जयादित्य को बहुत ही रुचिपूर्ण ढंग से स्मरण किया है।

8209837844
w.ugc-net.com

चीनी यात्री **इत्सिंग** ने अपनी भारत यात्रा के प्रसंग में जयादित्य का प्रभावपूर्ण ढंग से वर्णन किया है। जयादित्य के जनम मरण आदि वृत्तांत के बारे में कोई भी परिमार्जित एवं पुष्कल ऐतिहासिक सामग्री नहीं मिलती। इत्सिंग की भारतयात्रा एवं विवरण से कुछ जानकारी मिलती है। तदनुसार जयादित्य का देहावसान **सं. 718 वि.** के आस पास हुआ होगा। जयादित्य ने भारविकृत पद्यांश उद्धृत किया है। इस आनुमानिक तथ्य के आधार पर जयादित्य का **सं. 650 से 700 वि.** तक के मध्य अवस्थित होना माना जा सकता है। पाणिनि मुनि ने अष्टाध्यायी के आठ अध्यायों में व्याकरण सूत्रों को लिखा है। अष्टाध्यायी को सभी संप्रदाय के लोगों ने समान रूप से अपनाया है। **जयादित्य** ने **'काशिका'** नाम से अष्टाध्यायी पर व्याख्या की है। काशी में इसकी सृष्टि हुई होगी क्योंकि काशिका का प्रधान अर्थ यही है **(काश्यां भवः काशिका)**। कुशकाशावलंबन न्याय से हम को जयादित्य के बारे में सोचने का

8209837844
v.ugc-net.com

अवसर मिलता है। संभव है जयादित्य **काशीवासी** हों। काशी आज भी संस्कृत व्याकरण के पठन-पाठन और व्याकरण ग्रंथों की सृष्टि का प्रधान केंद्र है।

राजतरंगिणी में **जयापीड** नामक राजा का नाम आया है, जो 667 शताब्दी में कश्मीर के सिंहासन पर बैठा था और जिसके एक मंत्री का नाम **'वामन'** था। कुछ लोग इसी जयापीड को **काशिका** का कर्ता मानते हैं। पर **मैक्समूलर** का मत है कि काशिकार जयादित्य कश्मीर के जयापीड से पहले हुआ है, क्योकि चीनी यात्री इत्सिंग ने 612 शताब्दी में अपनी पुस्तक में जयादित्य के **वृत्तिसूत्र** का उल्लेख किया है। इस विषय में इतना समझ रखना चाहिए के कल्हण के दिए हुए संवत् बिल्कुल ठीक नहीं हैं। काशिका के प्रकाशक बालशास्त्री का मत है कि काशिका का कर्ता बौद्ध था, क्योंकि उसने मंगलाचरण नहीं लिखा है और पाणिनि के सूत्रों में फेरफार किया।

8209837844
www.ugc-net.com

बहुत से वैयाकरण प्राय: काशिका को संपूर्ण रूप से जयादित्य का बनाया हुआ नहीं मानते। **पुरुषोत्तमदेव, हरिदत्त** आदि विद्वानों ने **भाषावृत्ति, पदमंजरी, अमरटीका सर्वस्व, अष्टांगहृदय** (सर्वांग सुंदरी टीका) में इसका उल्लेख किया है। कुछ विद्वान् जयादित्य और वामन को काशिका का निर्माता मानते हैं। काशिका के समान **भर्त्रीश्वर, जयंत, मैत्रेयरक्षित,** आदि की अष्टाध्ययायी व्याख्याएं थीं। उनमें से कम वृत्तियाँ पाई जाती हैं। काशिका के प्रभाव में नवीन प्राचीन सभी वृत्तियाँ विलीन हो गईं और व्यवहार रूप में आज भी काशिका ही रह गई है। काशिका पर **जिनेंद्रबुद्धि कृत** 'काशिका विवरण पंजिका' (न्यास) और हरदत्त मिश्र ने **'पदमंजरी'** ग्रंथ लिखा है। जिनेंद्र कृत ग्रंथ 'न्यास' नाम से ही प्रसिद्ध है। यह बहुत विशालकाय कई भागों वाला ग्रंथ है। न्यास ने सर्वथा काशिका के समर्थन में प्रयास किया है परंतु पदमंजरी में कैयट (महाभाष्य के टीकाकार) का अनुसरण है और अनावश्यक सामग्री को विडंबित किया गया है।

8209837844

ww.ugc-net.com

बहुत से वैयाकरण प्राय: काशिका को संपूर्ण रूप से जयादित्य का बनाया हुआ नहीं मानते। **पुरुषोत्तमदेव, हरिदत्त** आदि विद्वानों ने **भाषावृत्ति, पदमंजरी, अमरटीका सर्वस्व, अष्टांगहृदय** (सर्वांग सुंदरी टीका) में इसका उल्लेख किया है। कुछ विद्वान् जयादित्य और वामन को काशिका का निर्माता मानते हैं। काशिका के समान **भर्त्रीश्वर, जयंत, मैत्रेयरक्षित,** आदि की अष्टाध्ययायी व्याख्याएं थीं। उनमें से कम वृत्तियाँ पाई जाती हैं। काशिका के प्रभाव में नवीन प्राचीन सभी वृत्तियाँ विलीन हो गईं और व्यवहार रूप में आज भी काशिका ही रह गई है। काशिका पर **जिनेंद्रबुद्धि कृत** 'काशिका विवरण पंजिका' (न्यास) और हरदत्त मिश्र ने **'पदमंजरी'** ग्रंथ लिखा है। जिनेंद्र कृत ग्रंथ 'न्यास' नाम से ही प्रसिद्ध है। यह बहुत विशालकाय कई भागों वाला ग्रंथ है। न्यास ने सर्वथा काशिका के समर्थन में प्रयास किया है परंतु पदमंजरी में कैयट (महाभाष्य के टीकाकार) का अनुसरण है और अनावश्यक सामग्री को विडंबित किया गया है।

8209837844

www.ugc-net.com

6. भट्टोजिदीक्षित (सोलहवीं शताब्दी)

भट्टोजी दीक्षित १६वीं शताब्दी में उत्पन्न संस्कृत वैयाकरण थे जिन्होंने **सिद्धान्तकौमुदी** की रचना की। इनका निवास स्थान **काशी** था। इन्होंने **शेषकृष्ण** से व्याकरण और धर्मशास्त्र का अध्ययन किया । वेदान्त का **नृसिंहाश्रम** , मीमांसा का **अपय्यदीक्षित** से अध्ययन किया । इनके शिष्य **वरदराज** भी व्याकरण के महान पण्डित हुए।

पाणिनीय व्याकरण के अध्ययन की प्राचीन परिपाटी में पाणिनीय सूत्रपाठ के क्रम को आधार माना जाता था। यह क्रम प्रयोगसिद्धि की दृष्टि से कठिन था क्योंकि एक ही प्रयोग का साधन करने के लिए विभिन्न अध्यायों के सूत्र लगाने पड़ते थे। इस कठिनाई को देखकर ऐसी पद्धति के आविष्कार की आवश्यकता पड़ी जिसमें प्रयोगविशेष की सिद्धि के लिए आवश्यक सभी सूत्र एक जगह उपलब्ध हों। भट्टोजिदीक्षित ने **प्रक्रिया कौमुदी** के आधार पर **सिद्धान्तकौमुदी** की रचना की। इस ग्रंथ पर उन्होंने स्वयं **प्रौढमनोरमा** टीका लिखी। पाणिनीय सूत्रों पर अष्टाध्यायी क्रम से एक अपूर्ण व्याख्या, **शब्दकौतुभ** तथा **वैयाकरणभूषण कारिका** भी इनके ग्रंथ हैं। इनकी सिद्धान्त कौमुदी लोकप्रिय है।

82098
net.com

भट्टोजिदीक्षित का संक्षिप्त परिचय-

- पिता- लक्ष्मीधर भट्ट,
- भ्राता- रंगोजीभट्ट,
- गुरू- शेषकृष्ण,
- पुत्र- भानुदीक्षित (रामाश्रय),
- भ्रातृपुत्र- कौण्डभट्ट,
- पौत्र- हरिदीक्षित ।

8209837844

w.ugc-net.com

भट्टोजिदीक्षित की रचनाऐं-

1. सिद्धान्त कौमुदी,
2. प्रौढमनोरमा,
3. शब्दकौस्तुभ,
4. वैयाकरणभूषणकारिका,
5. तत्वकौस्तुभ (वेदान्त),
6. त्रिस्थलीसेतु (धर्मशास्त्र),
7. तिथिनिर्णय(धर्मशास्त्र),
8. प्रवरनिर्णय (धर्मशास्त्र),
9. चतुर्विंशतिमतव्याख्या (धर्मशास्त्र) ।

सिद्धान्तकौमुदी की प्रसिद्ध टीकाएँ-

तत्वबोधिनी	-	ज्ञानेन्द्र सरस्वती
बालमनोरमा	-	वासुदेव दीक्षित
प्रौढ़मनोरमा	-	भट्टोजिदीक्षित
लघुशब्देन्दुशेखर	-	नागेश भट्ट

Next class....

॥व्याकरण एवं भाषाविज्ञान॥

WE WANT
YOUR
FEEDBACK

LIKE
& SHARE

For More Information….

www.ugc-net.com

/Fillerform

/Fillerform

//Fillerform

info@fillerform.com

8209837844

8209837844

www.ugc-net.com

thank
you